AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

ykd lkfgR; vkj ykdkfÙk;k

ORIGINAL ARTICLE

Author
nokun ckjdj
सहायक प्रध्यापक, हिन्दी विभाग
शासकीय नवीन महाविद्यालय, मोपका
जिला बलौदाबाजार, छत्तीसगढ़, भारत

'kk/k lkj

ykd lkfgR; ekuo thou dh okLrfod vfHkO;fä gA ykd ekuo lenk; dk og ni.k ftles thou d okLrfod Lo#i dk çR;{k ;k vçR;{k :i n[k ldr gA ykd lL—fr dk çk< :i ykd lkfgR; gA ykd lkfgR; eyr% ykd ckyh e gkrk gA ^ykd lkfgR;* lkfgR; dk vkèkkj fcUn gA dFkk oLr d lkFk ykd lkfgR; dk f'kYi Hkh Nu&Nudj ifjfu"Br lkfgR; rd igprk jgk gA ykd lkfgR; e ykdkfÙk;k dk fo'k"k egRo gA ykdkfÙk;k ekuo thou e xkxj e lkxj Hkju dk dke djrh gA ykdkfÙk;k vFk o çHkko i.k gku d lkFk &lkFk 0;X; :i e lkeu oky 0;fä dk pkV igpku d fy; Hkh ç;kx e yk;k tkrk gA

eq[; 'kCn

ykd lkfgR;] ykdkfDr] f'kYiA

लोक साहित्य में मानव जीवन की आत्मा समाहित है, लोक शब्द का प्रारंभिक प्रयोग वेद ग्रंथो में मिलता है। लोक शब्द अंग्रेजी के फोकलिटरेचर का अनुवाद है। लोक अर्थात् जन और साहित्य जहाँ हित की भावना निश्चित हो, उसे लोक साहित्य, जन साहित्य कहेंगे। सम्पूर्ण अर्थ में लोक साहित्य अर्थात् जन–जन को साहित्य अंचल के सबसे पीछे खड़े उस व्यक्ति का जन साहित्य है। लोक साहित्य का सबसे बड़ा दायित्व संस्कृति का विकास करना है। लोक साहित्य के क्षेत्र में संस्कृति के विकास के लिये साहित्य विद्वानजनों ने श्रेष्ठ कार्य किया है। लोक साहित्य वह महासागर के समान है, जिनमें नाना जीवों की भाँति विभिन्न संस्कृतियों व परम्पराओं का विकास होता है। लोक साहित्य वर्तमान में ही नही अतीत से भविष्य तक लोक साहित्य में निरंतरता है। हिन्दी जगत के महान साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने लोक जीवन के लिये लोक साहित्य के शिल्प और वस्तु दोनों को उन्मुक्त भाव से स्वीकार किया। कहानी सम्राट प्रेमचंद के कथा साहित्य का आधार लोक जीवन है।

वस्तुतः वैदिक काल से ही लोक शब्द प्रचलित है। ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में यह शब्द आया है। पाणिनी ने वेद और लोक शब्दों के भिन्न–भिन्न स्वरूपों का बोध कराता है। महाभारत में व्यास जी स्पष्ट कर देते हैं कि प्रत्यक्षदर्शी लोक ही सारे विश्व को सर्व प्रकार से देखने वाला होता है। व्यास मुनि ने स्पष्ट लिखा है – 'प्रत्यक्षदर्शी लोकानां सर्वदर्शी भवेन्तरः।' इसी प्रकार गीता में भी स्पष्ट लिखा गया है।

लोक साहित्य का काव्य शिल्प निरंतर उपेक्षा का विषय रहा है। यह सच है कि यह साहित्य रीतिबद्ध नहीं होता है। ना तो उसमें छंद की मात्राओं का विधान है और न गणों का। लोक साहित्य की रचना आम जनों के बीच से ही होती है। लोक जीवन का अभिव्यंजना– लोकगीतों व लोक कथाओं में मिलता है, वैसा कही भी नहीं मिलता।

लोक साहित्य मानव की हृदय की सच्ची पुकार है। लोक साहित्य उतना ही प्राचीन है, जितना की प्राचीन लोग। डॉ. सत्येन्द्र कहते हैं –"लोक मनुष्य का वह वर्ण है जो आश्रिजात्य संस्कार शास्त्रीयता और पांडित्य को चेतना अथवा अहंकार से शून्य है और जो एक परम्परा के प्रवाह में जीवित रहता है।"[1]

लोक साहित्य का सबसे बड़ा गुण सामूहिकता की भावना है। वह जमा रचनाशीलता का ही परिणाम है। लोक साहित्य लोगों के द्वारा लोगों के लिये रचा जाता है, तथापि लोक साहित्य के रचियता सम्पूर्ण क्षेत्र, समाज, वर्ग का प्रतिनिधि मात्र होता है। उसका सृजक कोई एक व्यक्ति होकर भी पूरा लोक होता है। डॉ. भुवनेश्वर अनुज के अनुसारः "लोक साहित्य लोक समूह द्वारा स्वीकृत व्यक्ति की परम्परागत मौखिक क्रम में पायी गयी वह वाणी है, जिसमें लोक मानव संग्रहित रहता है। आदिम मानव के मस्तिष्क की सीधी तथा सच्ची अभिव्यक्ति ही लोकवार्ता तथा लोक साहित्य है।"[2]

मानव जीवन में अनेक दौर से गुजरता है, देखता, समझता, भोगता है, अनुभव लेता है तब जाकर वे जीवन को समीप से समझने का प्रयत्न करता है। लोकोत्तियों और लोक मुहावरों में मानवीय मूल्यों का बखूबी चित्रण देखने को बनता है। उन्हें देखकर ऐसा लगता है मानव जीवन मानवीय मूल्यों के रूप इस तरह से घुले मिले से प्रतीत होते मानो कभी वे अलग ही ना थे। लोकोक्ति को सामूहिक आविष्कार है इसलिये उनमें व्यक्ति सामाजीकरण पर अधिक ध्यानाकर्षित करने का प्रयत्न करता है। लोकोत्तियों की शैली मनोवैज्ञानिक स्तर पर मनुष्य को मनुष्य होने का निरन्तर एहसास कराती है।

लोक जीवन में चर्चित इन लोकोत्तियों को लोक मनीषियों ने दीर्घकालीन अनुभवों के आधार पर लोक जीवन पर अनेक लोकोत्तियों की रचना मनीषियों ने अनुभवों के आधार पर संक्षिप्त सूत्र में आबद्ध किया है। लोकोत्तियाँ या कहावतों के द्वारा गागर में सागर भरने का प्रयास किया जाता है। समास शैली में कही गई लोकोत्तियाँ आकार में छोटे होने के बावजूद अपने अंदर एक विशाल भाव राशि को समेटे हुए होती है।

सामाजिक व्यवहार की इन शगुन–अपशगुन कहावतों में कभी–कभी जीवन का गहन एवं गुढ़ रहस्य भी मिलता है, जो सत्य के नजदीक होता है, कुछ इस तरह सेः

छोटी मोटी कामनी सब हो विष की बेल,
बैरी मारे दाब तै, ये मारै हंस–खेल।

कुछ लोकोत्तियॉ मानव प्रकृति एवं उसके व्यवहार का नग्न यर्थात् प्रस्तुत करती हैः

'चोर जुआरी गंठकस, जार अर नार छिनाए।
सौ सौ सौगन्ध खाएं तो भी भूल न कर इतवार।।'

सामाजिक संबंन्धित लोकोत्तियाँः

'सौ में सूर, हजार में काना, सवा लाख में ऐंचा ताना।
ऐसा ताना कहें पुकार, कर्रा से रहियों होशियार।'

सामान्य जीवन में लोक मानस में अनेक लोकोत्तियों का प्रचलन होता है जो स्थान विशेष पर केन्द्रित होती हैः 'जिसने देख्यी ना दिल्ली वो कुप्तान बिल्ली।

कलकत्ता शहर के बारे में बड़ी ही रोचक कहावत है किः

'घोड़ा गाड़ी, नोना पानी, और रोड के धक्का।
ए तीनू से बचल रहे, तब केलि करे कलकत्ता।।

इतिहास संबंधी लोकोत्तियाँ बनाई गई है– उस स्थान विशेष की ऐतिहासिकता का उजागर अवश्य करने में सक्षम होती है, जैसे –'धोती आला कमाने, टोपी आला खातें।'

मुस्लिम शासकों के समय की एक कहावत बहुत प्रसिद्ध हैः

'पढ़ै फारसी बेचे तेल, देखों ये कुदरत का खेल।'

पशुओं से संबंधित लोकोत्तियाँ जन सामान्य में अत्यंत लोकप्रिय है। इनमें पशु–पक्षियों के स्वभाव, गुण, दोष तथा उनमें आन्तरिक एवं बाह्य व्यापार का विविध उल्लेख देखने को मिलता है। खेती–किसानी में कृषि कर्म का प्रधान अंग बैल रहा है। बैल के गुणों एवं लक्षणों को लिखा हैः

'सींग मुड़े, माथा उठा, मुंह होवे गोल।
रोम, नरम, चंचल करन, तेज बैल गनमोल।'

लोक की उक्ति या पारम्परिक कथन लोकोत्ति से अभिहित होती है। मानव जीवन अपने अनुभवों को सीमित शब्दों में संक्षेप और अनोखे ढंग से अभिव्यक्ति की जाती है, उसे लोकोत्ति कहते हैं।

डॉ. भालचंद्र तेलंग के अनुसारः "छत्तीसगढ़ी हवाओं में जीवन के प्रिय, अप्रिय सत्य, बुद्धि अनुभव के ज्ञान, [3]

छत्तीसगढ़ी लोकोत्तियाँ छत्तीसगढ़ी मानसिकता को तो प्रकट करती ही है, इस अंचल के जनमानस की बुद्धि को भी माप लेती है।

fu"d"k

निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है कि लोक साहित्य और मानव जीवन का अनोखा रिश्ता है क्योंकि लोक साहित्य स्वतः नहीं पनपते बल्कि लोक के द्वारा लोगों के लिये बनते हैं। साहित्य जगत अनेक साहित्य से समृद्ध है। नाना विधाओं पर साहित्य लिखे गये ग्रंथ में लोक साहित्य भी एक है। लोक साहित्य लोगों के बीच के आचार–विचार, खान–पान, रीति–रिवाज व परम्पराओं को निकट से देख, समझकर साहित्य में उसे उजागर करने का प्रयत्न लोक साहित्य में किया जाता है। लोक साहित्य सम्पूर्ण मानव जीवन के बिम्ब को साहित्य के माध्यम से लोक जीवन, लोक साहित्य में प्रस्तुत करने का कार्य करती है। लोक साहित्य में लोकोत्तियों का महत्वपूर्ण स्थान है। लोकोत्तियाँ मानव जीवन के वास्तविक स्वरूप को शब्दों के माध्यम से मुहावरे या लोकोत्तियाँ के माध्यम से अनोखे अंदाज में पेश करती है। अतः लोक साहित्य मानव–जीवन के विकास में अत्यंत आवश्यक है।

lanHkZ lwph

1. श्रीवास्तव राजेश, *लोक साहित्य,* प्रकाशक कैलाश पुस्तक सदन, हमीदि मार्ग, भोपाल, संस्करण–2011
2. अग्रवाल अनसूया, *हिन्दी लोक साहित्य शास्त्र सिद्धांत और विकास,* पृष्ठ सं. 62ः प्रकाशन– नीरज बुक सेंटर, सी–32, आर्यानगर साजायरी, दिल्ली, संस्करण 2009
3. ओझा मृणालिका, *लोक कथाओं में लोक और लालित्य,* पृ. 35ः प्रकाशन, शताक्षी प्रकाशन, शाप नंबर 8, मार्कटिंग सेन्टर, चैबे कालोनी, रायपुर, संस्करण 2011

––==00==––